Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 21, Issue No. 2, March-2024,(Special Issue), ISSN 2230-7540

कमलेश्वर के उपन्यासों में नारी के संघर्ष की दिशाएँ

रीतू रानी[1]* डॉ. निरुपमा हर्षवर्धन[2]

[1] शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

Email: shalusoni201291@gmail.com

[2] पर्यवेक्षक, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर राजस्थान

सार – *कमलेश्वर के उपन्यासों में नारी के संघर्ष की यथार्थ दिशाओं का चित्रण प्राप्त होता है। कमलेश्वर के उपन्यासों में ग्रामीण, कस्बाई तथा महानगरीय नारी के विविध रूपों के साथ विभिन्न संघर्ष की दशाओं का चित्रण हुआ है। उन्होंने नारी को भारतीय आदर्श नारी की प्रतिभा से मुक्त कर यथार्थ की पृष्ठभूमि पर उतारा है। निम्न वर्ग से लेकर उच्च, मध्यवर्ग तक की महिलाओं के पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन का वास्तविक चित्रण कमलेश्वर ने नारी के संघर्ष को दर्शाते हुए किया है। कमलेश्वर ने नारी को घर से लेकर समाज तक अपने अस्तित्व एवं सम्मान के लिए सदैव संघर्ष करने वाली स्त्री कहा है। कमलेश्वर का कहना है कि स्त्री चाहे वह माता है, पत्नी है, बहन है या प्रेमिका है समाज कभी भी उसे पुरुष के समान नहीं मानता है वह पुरुष समाज में समान दर्जा प्राप्त करने के लिए निरन्तर संघर्ष करती रहती है और यह संघर्ष परिवार से लेकर समाज के स्तम्भ तक चलता रहता है। नारी ने सदैव कर्तव्य बोध ही सीखा है उसने कभी पहले अधिकार क्षेत्र की बात नहीं की है और आज वह जिस अधिकार क्षेत्र को प्राप्त करना चाहती है वह अधिकार क्षेत्र उसे प्रतिदिन संघर्ष द्वारा प्राप्त करना पड़ रहा है। वह शिक्षा से लेकर, धर्म, कार्य, राजनीति तथा सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रत्येक पथ पर संघर्ष कर रही है जो उसके यथार्थ रूप को समाज के समक्ष उजागर कर सकें। 'कमलेश्वर नारी को उसके अस्तित्व के साथ समाज में अधिकार एवं सम्मान दिलाने के लिए नारी के प्रत्येक कार्य को संघर्ष दिशा के साथ जोड़ते हुए उसका वर्णन करते हैं।*

कीवर्ड – *कमलेश्वर, उपन्यास, नारी*

----------X----------

प्रस्तावना

आजादी के बाद के हिन्दी उपन्यासों में नारी के तीन रूप दिखाई पड़ते हैं, अपने पहले रूप मे वह सदियों से चलती आ रही शोषण और अत्याचार की स्थितियों की शिकार है। दूसरे रूप में वह नयी परिस्थितियों से पैदा हुई समस्याओं से जूझ रही है और तीसरे रूप में आर्थिक दृष्टी से स्वावलम्बी होने, परम्परागत नारी संहिता की जकड़न को चुनौती देने और राजनीतिक दृष्टि से सबलीकरण की दिशा में अग्रसर होने के लिए संघर्षरत है। सदी के अन्तिम दो दशको में प्रकाशित उपन्यासों से हमारा साक्षात्कार ऐसी स्त्री पात्रो से होता है जो अपने सामने उपस्थित चुनौतियों की दृढ़ता के साथ स्वीकार करती है और अपने किसी निर्णय के लिए पुरुष का मुँह नहीं जोहती है। अधिकारों की प्राप्ति या अस्मिता की रक्षा के लिए साहसपूर्ण कदम उठाने की पहल करती है। परन्तु ये समस्त कार्यों को वह निरन्तर संघर्ष के माध्यम से करते हुए समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए सजग रहती है। काली आँधी उपन्यास की मालती के रूप में ऐसी आधुनिक माता का यथार्थ संघर्ष रूप कमलेश्वर ने चित्रित किया है जो घर और बाहर की दोहरी भूमिका निभाने में अपने को असफल पाती है और निरन्तर इस सामंजस्य को पूर्ण करने के लिए संघर्ष करती रहती है। मालती एक सफल व कुशल राजनीतिज्ञ है। राजनीति में आने के बाद वह निरंतर सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ती चली जाती हैं। राजनैतिक क्षेत्र में सफलता की दौड़ में मालती का घर – परिवार उससे पीछे छूट जाता है जहाँ वह अकेले उसे एकरूपता प्रदान करने के लिए संघर्ष करती है। 'तीसरा आदमी' उपन्यास में चित्रा का विवाह नरेश के साथ होता है जो रेडियो अनाउंसर है। नरेश का परिवार संयुक्त परिवार है जो इलाहाबाद में रहता है। पिता जीवन भर उस परिवार के लिए संघर्ष करती है। इसी प्रकार कमलेश्वर ने नारी के संघर्षो को अलग–अलग पृष्ठभूमि पर दर्शाया है।

निष्कर्ष

प्रकृति ने नारी और पुरुष को एक दूसरे का पूरक बनाया है। एक के बिना दूसरे का व्यक्तित्व अपूर्ण और अधूरा ही रहता है। विवाह इसी प्राकृतिक विधान का सामाजिक संस्कार है। पत्नी बनकर नारी पुरुष की सहधर्मिणी और अर्धांगिनी बनती है। पति – पत्नी परिवार रूपी रथ के दो पहिए हैं। एक के अभाव में परिवार का रथ चलना मुश्किल है। पत्नी पुरुष को प्रेरणा और संबल प्रदान करती है। प्रेम, विश्वास, सेवा, समर्पण से वह पति के हृदय में स्थान बनाती है। कमलेश्वर कहते हैं– विवाह का वह परम्परागत स्वरूप अब नष्ट हो चुका है, उसकी सामाजिक अपेक्षाएँ बदल गई है। कमलेश्वर ने स्त्री की परम्परागत नारी संहिता से मुक्त कर एकदम यथार्थ रूप में चित्रित किया है। उनके उपन्यासों में जिन स्त्री पात्रों का पत्नी रुप उभरा है वे बिल्कुल आधुनिक पत्नी है जो अपने आत्मसम्मान और अधिकारों की रक्षा करते हुए आत्म निर्णय की जिन्दगी जीती है। 'तीसरा आदमी की चित्रा, वही बात की समीरा, डॉक बंगला की इरा, काली आंधी की मालती, लौटे हुए मुसाफिर की सलमा, सुबह–दोपहर शाम की शांता ऐसी ही स्त्री पात्र है जो पुरुष प्रधान समाज द्वारा थोपी गई रूढ़ियों को तोड़कर प्रगतिशीलता का परिचय देती है। परन्तु फिर भी ये सभी स्त्री किसी न किसी पक्ष पर संघर्ष का सामना करती ही है। चित्रा के रूप में कमलेश्वर ने एक ऐसी शिक्षित स्त्री को प्रस्तुत किया है जो परम्परागत भारतीय पत्नी की भूमिका ईमानदारी के साथ निभाने पर भी पति का प्रेम, विश्वास नहीं प्राप्त कर पाती और परित्यकता का जीवन व्यतीत करती है। अर्थात् उसके जीवन में दाम्पत्य संघर्ष चलता रहा और यह संघर्ष असफल साबित हुआ है। वही बात उपन्यास की समीरा आधुनिक युग की पढ़ी–लिखी पत्नी है जो परम्परागत नारी संहिता को त्यागकर, अपने पहले पति से संबंध विच्छेद कर नये सिरे से नये संबंध बनाकर अपनी जिन्दगी जीती है। अर्थात् वह भी इस संघर्ष क्षेत्र से गुजरते हुए अपने जीवन में आगे बढ़ती है। डाक बंगला की इरा के रूप में कमलेश्वर ने ऐसी स्त्री की व्यथा का चित्रण किया है जो अनमेल विवाह के कारण अपने पति को कभी स्वीकार ही नहीं कर पाती है। काली आँधी की मालती ऐसी महत्वाकांक्षी स्त्री है जो राजनीति के क्षेत्र में निरन्तर सफलता प्राप्त करती हुई अपनी सफलता में कैद होकर अपने पति और बेटी से दूर हो जाती है। मालती का पारिवारिक जीवन तहस–नहस हो जाता है। व्यक्तिगत जिन्दगी दर्द की दास्ताँ बन जाती है। उपन्यास सुबह–दोपहर–शाम की शांता देशभक्ति एवं स्वाभिमान जैसे आदर्श मूल्यों से युक्त स्वतंत्र विचारों

www.ignited.in

वाली ऐसी पत्नी है जो अपने पति के विरुद्ध जाकर अपने क्रांतिकारी देवर नवीन का पक्ष लेती है उसकी मदद करती है। शांता का पति जब क्रांतिकारियों के बारे में पुलिस को बता देता है तो वह अपने पति की लानत भेजती है। वह कहती है देखो... तुम... मेरा सुहाग जरूर हो लेकिन देश के लिए कलंक हो। लौटे हुए मुसाफिर की सलमा अपने पति मकसूद के अजीब रंग–ढंग के कारण परेशान रहती है।

इस प्रकार कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों में चित्रा, समीरा, इरा, मालती, शांता सलमा के रूप में स्वतंत्र विचारों वाली, अपने निर्णय की जिन्दगी जीने वाली पत्नी का चित्रण किया है। ये स्त्री पात्र नारी संहिता की जकड़न की तोड़कर आधुनिक स्त्री के सबलीकरण की विचारधारा को प्रतिपादित करती है। सजग आत्मचेतना और आत्म निर्णय से मुक्त होकर सकारात्मक ढंग से अपने व्यक्तित्व की रचना करती है। परन्तु यह व्यक्तित्व उन्हें संघर्ष की कई दिशाओं को पूर्ण करने के पश्चात ही प्राप्त होता है।

सन्दर्भ सूची

1. कमलेश्वर, समग्र उपन्यास – एक सड़क सत्तावन गलियाँ, संस्करण 2011, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली
2. कमलेश्वर, समग्र उपन्यास – लौटे हुए मुसाफिर, संस्करण 2011, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली
3. कमलेश्वर, समग्र उपन्यास–तीसरा आदमी, संस्करण 2011, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली
4. कमलेश्वर, समग्र उपन्यास– डाक बंगला, संस्करण 2011, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली
5. कमलेश्वर, समग्र उपन्यास – समुद्र में खोया हुआ आदमी, संस्करण 2011, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली
6. कमलेश्वर, समग्र उपन्यास– काली आँधी, संस्करण 2011, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली
7. कमलेश्वर, समग्र उपन्यास – आगामी अतीत, संस्करण 2011, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली
8. कमलेश्वर, समग्र उपन्यास – वही बात, संस्करण 2011, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली
9. कमलेश्वर, समग्र उपन्यास – सुबह... दोपहर... शाम, संस्करण 2011, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली
10. कमलेश्वर, समग्र उपन्यास – रेगिस्तान, संस्करण 2011, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली
11. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, संस्करण 2010, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली
12. कमलेश्वर, अनबीता व्यतीत, संस्करण 2012, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
13. कमलेश्वर, एक और चन्द्रकान्ता (दो भाग), संस्करण 2011, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली.
14. कमलेश्वर, अम्मा, संस्करण 2013, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

Corresponding Author

रीतू रानी*

शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर राजस्थान

Email : shalusoni201291@gmail.com

www.ignited.in